संयुक्तांक

२२ व २३

ह
स
ता
क्ष
र

शहर

मैंने शहर को देखा और मैं मुस्कराया
वहाँ कोई कैसे रह सकता है
यह जानने मैं गया
और वापस न आया ।

~ मंगलेश डबराल

हस्ताक्षर

संयुक्तांक - 22 व 23
(जनवरी 2021 से जून 2021 तथा जुलाई 2021 से दिसंबर 2021)

संपादक मंडल

हर्ष उरमलिया
मानसी यादव
जोगेंद्र सुथार
कृतिका
प्रखर दीक्षित
ज़िक़रा कलीम
आयुष्मान पटेल
जसविंदर सिंह

संपादक

रचना सिंह

हस्तलेखन सहयोग

आकृति कठेरिया, ज़िक़रा कलीम, प्रखर दीक्षित, जोगेंद्र सुथार, मानसी यादव, हर्ष उरमलिया, गंगाराम, कृतिका, नंदिनी गिरि, राम भुआल, धर्मेंद्र प्रताप सिंह

चित्रांकन

श्रेयस, तुलसी

संपादकीय संपर्क

हिन्दी विभाग, हिन्दू महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-07
ईमेल - hastakshar.2005@gmail.com

• प्रकाशित रचनाओं के विचार से हस्ताक्षर का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रम

> चौखट : रचना सिंह 4.

> साक्षात्कार : ले दे के अपने पास फ़क़त.... 5.
(किस्सागो हिमांशु वाजपेयी से बातचीत)

> स्मृति शेष : कुछ पाकर खोना है, कुछ खोकर पाना है 33.
– रामेश्वर राय (लता मंगेशकर पर विशेष)

> पुनः पाठ : हम अंधेरे अकाल की पगडंडियों पर चलते हैं 39.
वाया तृणजल धनजल – पल्लव

> पुराने-चावल : हबीब तनवीर का रंगकर्म – अमितेश 45.

> अपनी जमीन : मत सहल हमें जानो (मीर तक़ी मीर) 52.
– प्रखर दीक्षित

> विविधा :
- आज के प्रश्न और अज्ञेय – नित्यानंद तिवारी 57.
- ठंड से नहीं मरते शब्द – प्रज्ञा त्रिवेदी 63.
- कोविड संकट के बीच रंगमंच – धर्मेंद्र प्रताप सिंह 68.
- सुनो हमें अनहद की तरह – हर्ष उरमलिया 72.
- वो सुबह कभी तो आएगी – आयुष्मान पटेल 82

> देशांतर : बहुत दूर की बात छेड़ता है कवि 86.
(मरीना त्स्वेतायेवा) – जोगेंद्र सुथार

> इन दिनों :
- किस्से ओलियागाँव के – अनन्या चौधरी 89.

- असलियत समेटे अफ़साने - नंदिनी गिरि
- इतिहास के पन्नों से विस्मृत और उपेक्षित
  —दिशा ग्रोवर
- विकास का रुकतापुर - आयुष्मान पटेल

रचनात्मक अंकुर :

- कविताएँ – राम भुआल, ऋतिक रोशन, ऋषभ द्विवेदी, बृजेश यादव 'नद्वेष' 104
- लेख – किन्नर जीवन - कमलकांत 108
- एकांकी – रात का डर - विकास 112

पांडुलिपि : पाँच कविताएँ – नीलेश रघुवंशी 117

परिशिष्ट : कविता में घर ('घर' पर कुछ कविताएँ) 126

चौखट

पिछले दो-ढाई साल हर ओर एक मौन उदासी पसरी रही। इस सब के बीच ही कोलाहल भी कुछ कम न था - अर्थहीन बातों का कोलाहल.. बड़े-बड़े वादों और दावों का कोलाहल.. और भी बहुत कुछ। लेकिन इसके बरक्स ही संवेदना और प्रेम की अजस्र धारा निरन्तर बहती रही चुपचाप। इस मौन के बीच बहुत कुछ सूख गया, बहुत कुछ नष्ट हुआ, पर फिर भी कुछ बचा रहा तो वह उम्मीद, जिसे ग़ालिब ने 'हसरत-ए-तामीर' कहा है। बहुत कुछ समय की छलनी में छन कर बीत रहा है, लेकिन यदि कुछ याद रहेगा तो इस मौन में पसरी हुई संवेदना। निराला ने लिखा है - "मौन मधु हो जाए / भाषा मूकता की आड़ में / मन सरलता की बाढ़ में / जल-बिन्दु सा बह जाए।" यह वही मौन है, जो बुनता रहता है - प्रेम, उम्मीद, परस्परता और सन्नाटे का छंद।

इसी शून्य-काल के बीच 'इस्लाक्षर' को भी कुछ समय के लिए मौन रहना पड़ा। लेकिन रचनात्मकता, दूब की तरह फिर-फिर हरी हो उठती है, जब भी वह आर्द्र ज़मीन के गर्भ में होती है। 'इस्लाक्षर' का यह संयुक्तांक (अंक २२ तथा २३) भी इसी आर्द्रता का परिणाम है। मिस्सागो हिमांशु वाजपेयी के लम्बे साक्षात्कार के साथ ही इस अंक में स्वर-साम्राज्ञी लता मंगेशकर की स्मृति में एक महत्त्वपूर्ण लेख, अज्ञेय पर आलोचक नित्यानंद तिवारी का वक्तव्य और 'पांडुलिपि' स्तंभ में नीलेश रघुवंशी की कविताएँ उनकी लिखावट में दी जा रही हैं। इसके अतिरिक्त 'परिशिष्ट' में घर पर केन्द्रित कुछ कविताएँ भी संकलित हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में किया गया यह विनम्र प्रयास आपके सामने है। शिकायत और सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

सूचना सिंह

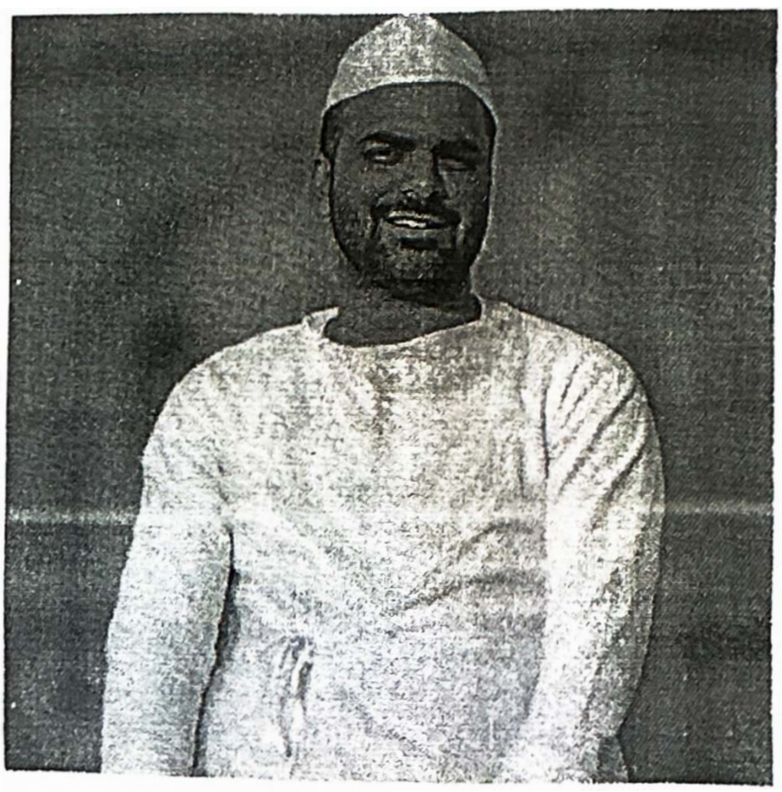

हिमांशु वाजपेयी

कुछ शहरों की पहचान लोगों से और कुछ लोगों की पहचान उसके शहर में ढल जाती है। हिमांशु और लखनऊ का रिश्ता कुछ ऐसा ही है। क़िस्सागो के रूप में मक़बूलियत पाने वाले हिमांशु को 2021 का साहित्य युवा अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह साक्षात्कार 9 जनवरी 2021 को कपूरथला, लखनऊ में मानसी द्वारा लिया गया।

ले दे के अपने पास फ़क़त...

(किस्सागो हिमांशु वाजपेयी से बातचीत)

मानसी: सर, एक विधा के तौर पर हम दास्तानगोई से बहुत कम परिचित हैं. इसलिए हमारे पाठकों के लिए, सबसे पहले आप दास्तानगोई का एक संक्षिप्त परिचय दे दीजिये।

हिमांशु: तो.... दास्तानगोई जो विधा है, पहले तो हम उसके नामकरण पर आते हैं, 'दास्तानगोई' दो लफ़्ज़ों से मिलकर बना है - 'दास्तान' और 'गोई'। दास्तान से मुराद है लम्बी कहानियों से. लम्बी मतलब ऐसी कहानियाँ जो तवील कहानियां हैं, जो कि की कई-कई दिन, कई-कई हफ़्तों, कई-कई महीनों, कई-कई सालों तक सुनाई जाती रही; और जो किस्सा दर किस्सा आगे बढ़ती रही। 'गोई' का अर्थ है, वो है कहना या सुनना... तो दास्तानगोई यानि कि दास्तान को सुनना. ये गोई का लफ़्ज़ बनाके हमने कई और लफ़्ज़ भी सुने हैं, जैसे कि ग़ज़लगोई - ग़ज़ल को कहना या ग़ज़ल सुनाना, शेरगोई - शेर कहना। इस तरह से दास्तानगोई एक विधा है, कहानी सुनाने की; खास तौर पर उर्दू में कहानी सुनाने की।

यह उर्दू स्टोरीटेलिंग का एक फॉर्म है, जो कि हिन्दुस्तान में मेडिवल पीरियड में बहुत ज्यादा..... जिसको फ़रोग़ मिला, जिसको उन्नति मिली। और ख़ास तौर पर मुग़ल बादशाहों के दौर में, और उसमें भी अकबर के दौर में, इसका बड़ा उरूज था; क्योंकि अकबर बहुत बड़ा पेट्रन (patron) भी था, दास्तानगोई का, और शौक़ीन भी था। उसने क्या किया था, कि एक तो अपने दरबार में दास्तानगो जमा किये। दूसरा उसने एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट कमीशन किया था 'दास्तान-ए-अमीर-हमज़ा', जो की सबसे मशहूर दास्तान है। दास्तानें तो कई-सारी हैं, 'दास्तान-ए- अलिफ़लैला' है, 'लैला-मजनूँ' है.. उसमें 'दास्तान-ए- अमीर हमज़ा' सबसे पॉपुलर दास्तान है. तो उसने क्या किया था कि 'दास्तान-ए-अमीर-हमज़ा' की जो पूरी कहानी है, उसको पेंटिंग्स पर बनवाया था, माने उसको उकेरा था। (पूरा चित्र देखेंगे तो आपको लड़ाई का दिखेगा ये वो सब). और फिर वो बड़ी-बड़ी पेंटिंग्स; उनके पीछे दास्तानगो खड़ा होता था और जो पेंटिंग है, पेंटिंग में जो कहानी है, वही कहानी बयान करता था, तो ऐसे (हाथों के इशारे से समझाते हुए..) एक तरीके से हमें ऑडियो- विज़ुअल किस्म की फीलिंग मिलती थी उससे. ये बहुत बड़ा प्रोजेक्ट था.... अकबर बहुत शौक़ीन था।

उसके बाद जब मुग़ल वहाँ दिल्ली में कमजोर पड़े और लखनऊ की तरफ कल्चरल सीन शिफ्ट हुआ, तो बहुत बड़े-बड़े दास्तानगो लखनऊ आ गए. फिर यहां दास्तानगोई